भाषा शिक्षण का आधार घर की भाषा

रणदीप कौर

घर पर बच्चों को भाषा का ज्ञान किस प्रकार होता है, और किस तरह बच्चे अपनी घरेलू भाषा के जटिल वाक्यों को भी बोलना सीख जाते हैं, इसे लेकर लोगों के अवलोकन पर आधारित कई सिद्धान्त और शोध मौजूद हैं। बच्चे बहुत कम उम्र में उनके घरों में बोली जाने वाली भाषाओं में बगैर गलतियाँ किए संवाद करना शुरू कर देते हैं। वे अपनी भावनाओं को बिना किसी विशेष प्रयास के व्यक्त करने में सफल रहते हैं, चीजें कैसे काम करती हैं यह जानने के लिए वे बहुत उत्सुक रहते हैं, उनमें सवाल करने की क्षमता होती है और कोई औपचारिक शिक्षा हासिल किए बिना ही उन्हें यह भी पता रहता है कि किस प्रकार अपने तर्कों को सामने रखना है और स्थितियों का विश्लेषण करना है। भाषा सिर्फ सम्प्रेषण का एक साधन भर नहीं है, वह बच्चों में अन्य संज्ञानात्मक क्षमताओं को विकसित करने में भी मदद करती है। इसलिए, बच्चे में भाषा के विकास की प्रक्रिया को समझना बहुत जरूरी है।

मनुष्य का मस्तिष्क होने के कारण हमारे भीतर अपने विचारों को सम्प्रेषित करने की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है और हमारी पहली साँस ही ध्वनि का कम्पन उत्पन्न कर देती है। जब कोई बच्चा पैदा होता है तो वह रोता है और इस रोने के साथ ही भाषा की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। वह रुदन अपने आप में इस बात का संकेत होता है कि बच्चे के भीतर खुद को अभिव्यक्त करने की प्रेरणा उठती है!

एक समय तक, बच्चे अपनी भावनाओं को सिर्फ रोकर ही अभिव्यक्त करते हैं। वे भूख लगने पर रोते हैं, पर उस रुदन की आवाज में और अच्छा न लगने पर या किसी कष्ट के समय होने वाले रुदन की आवाज में फर्क होता है। कष्ट में होने वाले रुदन और खेलते समय किए जाने वाले रुदन में फर्क होता है।

जब बच्चे बड़े होते हैं, तो वे संवाद करने के अन्य तरीकों का प्रयोग करना भी शुरू कर देते हैं। उदाहरण के लिए वे मुस्कुराते हैं और हँसते भी हैं और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की यह प्रक्रिया अगले स्तर तक जाती है। धीरे–धीरे वे अपने परिवेश से शब्द उठाना शुरू कर देते हैं, यद्यपि शुरुआत में वे सिर्फ कुछ ध्वनियाँ ही निकाल पाते हैं, जैसे मम, बाबा, हुँ....। और, बच्चों को हमेशा ही इन ध्वनियों को अलग–अलग तरीकों और आवाजों में दोहराने में मजा आता है।

जैसा कि भाषाविद, नोम चोम्स्की कहते हैं, "बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, क्योंकि मस्तिष्क में भाषा को ग्रहण करने का एक उपकरण होता है, जो अपने परिवेश से भाषा के रूप में तथा स्पर्श और भावनाओं जैसे अन्य संकेतों के रूप में, दोनों प्रकार की विभिन्न उत्प्रेरक हलचलों के प्राप्त होने पर सक्रिय हो जाता है। उसके द्वारा इन सारे संकेतों पर ध्यान दिया जाता है और वे दर्ज हो जाते हैं तथा अन्दर जाने वाली ये सारी जानकारियाँ मस्तिष्क में बैठने के लिए समय लेती हैं, और फिर वे ग्रहण कर ली जाती हैं। यह एक क्रमिक और स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसके बाद मस्तिष्क द्वारा ग्रहण की जाने वाली ये जानकारियाँ और अनुभूतियाँ, अभिव्यक्तियों में परिवर्तित हो जाती हैं: यानी, घर की प्रथम भाषा, जो बच्चे स्वाभाविक रूप से बोलना शुरू करते हैं और अपने विचारों को व्यक्त करने के उपकरण के रूप में उसका इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं।"

बच्चे के जन्म से लेकर उसके सम्प्रेषण करना शुरू करने तक की इस पूरी प्रक्रिया में, उसके परिवेश से जानकारियों और अनुभूतियों को ग्रहण करने का सिलसिला कम से कम दो साल तक चलता है। इसी प्रकार, जब बच्चा लक्ष्य भाषा या कक्षा की भाषा से रूबरू होता है, तो उसे ऐसी ही जानकारियों से समृद्ध परिवेश की आवश्यकता होती है जिसमें बच्चा उस लक्ष्य भाषा को सुनता है, समझता है, अपने भीतर दर्ज करता है और फलस्वरूप उसे बोलने लगता है। सामान्यतः हमारे औपचारिक परिवेश में हम अपने बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वे तुरन्त ही स्कूल की भाषा को

समझना और बोलना शुरू कर दें, पर हम यह भूल जाते हैं कि लक्ष्य भाषा से पहले उनका वास्ता नहीं पड़ा होता।

बच्चे सबसे पहले अपने लिए, खुद से बात करने के लिए, भाषा का उपयोग करते हैं। छोटे बच्चों को ध्यान से देखने पर हम पाते हैं कि वे उनके सामने आए किसी नए शब्द को कई बार बोलते हैं। वे इन शब्दों को सबसे पहले खुद के लिए उपयोग करते हैं। खुद से बात करना बच्चे के लिए उस शब्द का अर्थ बनाने वाली प्रक्रिया होती है, जो बच्चे के दिमाग में किसी रूप में दर्ज हो जाता है और फिर भविष्य में कभी भी उस शब्द की जरूरत पड़ने पर बच्चा उसका उपयोग करता है।

चूँकि आगे बच्चे सामाजिक मेलजोल के लिए भाषा का उपयोग करते हैं, इसलिए उनके लिए यह समझना जरूरी होता है कि दूसरे किस प्रकार उसका उपयोग कर रहे हैं और उसे समझ रहे हैं। इसके लिए उन्हें भाषा की कुछ विशेष संरचनाओं को समझना होता है, जिन्हें वे भाषा के अर्जन की प्रक्रिया के माध्यम से समझते हैं। यह प्रक्रिया अचेतन ढंग से तब होती है जब वे इस तरह के परिवेश में होते हैं। इस प्रक्रिया में उनके द्वारा व्याकरण की कुछ गलतियाँ करना बहुत स्वाभाविक है, जिसे अनदेखा कर दिया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए खेलते समय जिन कविताओं और शब्दों का वे प्रयोग करते हैं, हो सकता है कि वे उनका सही इस्तेमाल न कर रहे हों या उनमें व्याकरण सम्बन्धी गलतियाँ हों। यह भाषा सीखने की प्रक्रिया है और इसलिए उन्हें न तो हतोत्साहित करना चाहिए और न ही उनकी गलतियों पर टोकना चाहिए।

घर की भाषा, भरपूर भाषाई निवेशों और अमूर्त अनुभवों के माध्यम से फलती–फूलती है। इसलिए, घर की भाषा ऐसा प्रभावशाली स्रोत है जिसका, बच्चों के उनके जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में स्कूल में दाखिला लेने से लेकर स्कूल में इस्तेमाल होने वाली भाषा से उनके भलीभाँति परिचित हो जाने तक, कक्षा में प्रयोग किया जाना चाहिए। पर उस भाषा के बारे में बच्चे को पहले से हासिल जानकारी और ज्ञात भाषा के माध्यम से अर्थ बनाने की प्रक्रिया को कक्षा की वास्तविक परिस्थितियों में अनदेखा कर दिया जाता है।

इसलिए, घर की भाषा के परिवेश को कक्षा की स्थितियों में भाषा शिक्षण का आधार बनाए रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है, हालाँकि इस शिक्षण प्रक्रिया को पूरा करने वाले अन्य कारक भी होते हैं।

घर की भाषा दूसरी या तीसरी भाषा की समझ विकसित करने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चे अपने घर की भाषा (हिन्दी) में 'स्पून' को 'चम्मच' कहते हैं और उन्हें इस बारे में अच्छी खासी समझ होती है कि चम्मच का प्रयोजन क्या होता है, वह कैसी दिखती है और उससे क्या–क्या किया जा सकता है। 'चम्मच' नामक वस्तु का उल्लेख होते ही उनका मस्तिष्क सम्बन्ध बनाना शुरू कर देता है। और यह समझ दूसरी भाषा या लक्ष्य भाषा तक पहुँच जाती है। स्कूल में बच्चे की भाषा को अनदेखा करने से वह हतोत्साहित महसूस कर सकता है, और स्कूल आने की उसकी हिम्मत ऐसे समय टूट सकती है जब वह अपनी औपचारिक शिक्षा की शुरुआत ही कर रहा होता है।

हर शब्द को किसी क्रिया में तबदील किया जा सकता है और उसे बच्चे की प्रासंगिक भाषा और लक्ष्य भाषा में बोला जा सकता है। क्रिया और स्पर्श से रहित शब्द बच्चे के लिए निष्प्राण ही रहते हैं, इसलिए एक ऐसा परिवेश बनाना जरूरी है जो बच्चों को भाषा के प्रयोग को जीवन के अनुभवों और वस्तुओं से जोड़ने के निरन्तर प्रयास करने के मौके देता हो।

अनुभवों पर आधारित सीखने का यह तरीका बड़े सकारात्मक परिणाम दे सकता है क्योंकि बच्चे का किसी वस्तु विशेष के स्थूल स्वरूप से सम्पर्क होता रहता है। स्कूल के भीतर और उसके आसपास की चीजों को बच्चों के लिए सार्थक स्रोतों के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बच्चों को कुछ वस्तुओं के साथ इस तरह के व्यक्तिगत सम्पर्क से जुड़े शब्दों को अपने भीतर दर्ज करने में मदद मिलती है। वे शब्दों को महसूस कर पाते हैं और अपने अनुभव के आधार पर वे जरूरत के मुताबिक उनके बारे में बात करने में समर्थ हो जाते हैं।

छोटे बच्चों की एक और बात है, जिस पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है, कि कोई भी गतिविधि करते वक्त वे खुद से बातें करते रहते हैं, चाहे वे अकेले ही क्यों न हों। उनका यह व्यवहार दर्शाता है कि वे खुद के लिए बात को पकड़ने की और उसकी समझ निर्मित करने की कोशिश कर रहे हैं और इस प्रकार बुदबुदाने से वे अपनी दिलचस्पी को भी बनाए रखते हैं। इसे उनके द्वारा की जाने वाली टिप्पणियाँ माना जा सकता है। इसलिए, जब बच्चे कक्षा में कोई गतिविधि कर रहे हों और खुद से बात कर रहे हों, तो शिक्षकों के रूप

में हमें उन्हें ऐसा करने देना चाहिए और इसे शोर की तरह में नहीं लेना चहिए।

चूँकि बच्चे बहुत थोड़ी–सी देर के लिए एकाग्रचित्त रह पाते हैं, इसलिए शिक्षकों के लिए खेल वाले तरीके का इस्तेमाल करना बहुत जरूरी हो जाता है जहाँ बच्चे तमाम तरह की गतिविधियाँ करते हैं। उदाहरण के लिए, कोई कविता सुनाते वक्त बच्चों को शिक्षकों के साथ मिलकर उस कविता को भावपूर्ण अभिनय सहित प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है।

सारी बातों को भाव–भंगिमाओं और क्रियाओं का रूप देना बच्चों के लिए जरूरी हो जाता है क्योंकि बच्चों में ढेर सारी ऊर्जा होती है और वे उसे बाहर निकालना चाहते हैं। यदि उनकी ऊर्जा को दबाया जाए, तो वे बहुत व्याकुल हो जाते हैं और उस विशेष गतिविधि में उनकी दिलचस्पी खत्म हो जाती है।

जीवन की शुरुआती अवस्थाओं में कहानी सुनाने के सत्रों के माध्यम से कई सिद्धान्त समझाए जा सकते हैं और इन सत्रों को इस प्रकार से तैयार किया जा सकता है कि बच्चों को ही उस कहानी के पात्र बनने को कहा जाए और फिर वे उनका अभिनय कर सकते हैं। इसके अलावा, बच्चों से कहानियों को चित्रों के माध्यम से भी व्यक्त करवाया जा सकता है, और फिर उन चित्रों को कक्षा की दीवारों पर चिपकाया जा सकता है, जबकि कहानी के कुछ शब्दों का उपयोग बच्चे की प्रासंगिक भाषा और लक्ष्य भाषा, दोनों में किया जा सकता है ताकि जो कुछ भी सीखा गया है बच्चा उसे अपने अन्दर भलीभाँति दर्ज कर ले।

References

1. Linguist, Mind & Language by Noam Chomsky
2. The Child's Language & the Teacher by Krishna Kumar
3. National Curriculum Framework 2005

शिक्षकों द्वारा बच्चों पर एकदम शुद्ध व सही लिखने का दबाव नहीं डाला जाना चाहिए, बल्कि शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों में लिखने के कार्यों को लेकर उनका रुख नरम होना चाहिए और ध्यान मौखिक व श्रवण–प्रधान गतिविधियों पर ज्यादा होना चाहिए और उनसे जैसा बन पड़े वैसा लिखने की उन्हें छूट देना चाहिए। बच्चे अपने लेखन का भी एक स्वरूप बना लेते हैं, अतः इस पहलू में भी उन्हें छूट देना चाहिए, क्योंकि यह बच्चे के लिए बहुत लाभप्रद होगा।

प्रेम, व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखना और भयमुक्त वातावरण ऐसे दरवाजे हैं जो बच्चों को खुलकर साँस लेने तथा उनके भीतर सृजनात्मकता व कल्पनाशीलता जैसी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

बच्चे बेहद जिज्ञासु होते हैं और उनमें सवाल करने और चीजों को खुद समझने की क्षमता होती है, इसलिए उन्हें स्कूल में दाखिला लेने के क्षण से ही एक ऐसा मंच उपलब्ध कराया जाना चाहिए जहाँ वे इन सवालों को व्यक्त कर सकें। इसी प्रकार, उनके भीतर भाषा को ग्रहण करने की जन्मजात क्षमता होती है। उन्हें लक्ष्य भाषा का एक समृद्ध भाषाई वातावरण दिया जाना चाहिए और फिर भाषा को ग्रहण करने की प्रक्रिया को कक्षाओं तक ले जाना चाहिए, यानी, उन्हें एक औपचारिक परिवेश के बजाय एक अनौपचारिक परिवेश दिया जाना चाहिए। इसलिए, लक्ष्य भाषा की समझ विकसित करने के लिए और बच्चे की अभिव्यक्ति के दायरे को विस्तृत बनाने के लिए, घर की भाषा का वातावरण अपने पंखों को फैला लेता है।

रणदीप कौर वाणिज्य की स्नातक हैं। वे 2011 से स्टेट इंस्टीट्यूट, देहरादून, उत्तराखण्ड में 'कम्युनिकेशन एण्ड एंगेजमेंट' टीम की सदस्य के रूप में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन से जुड़ी हुई हैं। भाषा का सीखना मस्तिष्क में किस प्रकार घटित होता है, इसे लेकर वे अपनी समझ बनाने की प्रक्रिया में हैं। उनमें लिखने और कविता करने का स्वाभाविक गुण है। उन्हें बच्चों को बड़े ध्यान से देखना बहुत अच्छा लगता है और उनका अधिकांश लेखन उनके इन्हीं अवलोकनों पर आधारित हैं। वे सतत सीखने वाली महिला हैं और उन्हें भ्रमण करना, नई जगहों पर जाना और फोटोग्राफी करना बहुत अच्छा लगता है। उनसे randeep.verma@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी